



एग्री आर्टिकल्स

(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)

वर्ष: 05, अंक: 05 (सितम्बर-अक्टूबर, 2025)

www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध

© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

कृषि में पोषण अभियान: एक समग्र दृष्टिकोण

*डॉ. पूनम चक्रवर्ती¹ एवं डॉ. अनिल नागवंशी²

¹कृषि विस्तार अधिकारी, किसान कल्याण एवं कृषि विकास विभाग, जबलपुर, मध्य प्रदेश

²अनुसंधानकर्ता, भारतीय मृदा विज्ञान संस्थान, भोपाल

*संवादी लेखक का ईमेल पता: poonamchakrawarty@gmail.com

भारत में कृषि केवल खाद्यान्न उत्पादन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह देश की खाद्य सुरक्षा और पोषण सुरक्षा का भी प्रमुख स्तंभ है। आज जब देश 'कुपोषण' और 'अति पोषण' जैसी दोहरी चुनौतियों से जूझ रहा है, तब 'पोषण अभियान' को कृषि क्षेत्र से जोड़ना अत्यंत आवश्यक हो गया है। पोषण अभियान, जिसे प्रधानमंत्री मातृ व बाल पोषण योजना के रूप में भी जाना जाता है, का उद्देश्य देश को कुपोषण मुक्त बनाना है। लेकिन यह लक्ष्य तभी पूर्ण होगा जब कृषि को पोषण के दृष्टिकोण से देखा जाए, जिसे हम "पोषक कृषि" (Nutri-sensitive agriculture) कहते हैं।

कृषि में पोषण अभियान की भूमिका

- 1. पोषक फसलों का प्रोत्साहन (Promotion of Nutri-crops):** सरकार अब पारंपरिक अनाज (जैसे धान, गेहूं) के साथ-साथ मोटे अनाज (जैसे बाजरा, रागी, ज्वार) और दलहन व तिलहन की खेती को बढ़ावा दे रही है। ये फसलें न केवल जलवायु-स्मार्ट हैं, बल्कि पोषण से भरपूर भी हैं।
- 2. किचन गार्डन और पोषण वाटिका:** ग्रामीण क्षेत्रों में घर के पीछे छोटे बगीचों (Nutrition Gardens) को प्रोत्साहित किया जा रहा है, जहां महिलाएं हरी सब्जियाँ, फल, औषधीय पौधे उगाकर अपने परिवार को ताज़ा व पौष्टिक भोजन उपलब्ध करवा रही हैं।
- 3. जैविक खेती और खाद्य गुणवत्ता:** रसायनों का अत्यधिक उपयोग खाद्य पदार्थों की गुणवत्ता को प्रभावित करता है। पोषण अभियान के अंतर्गत किसानों को जैविक खेती अपनाने हेतु प्रशिक्षण दिया जा रहा है, जिससे स्वस्थ और सुरक्षित खाद्य उत्पादन को बढ़ावा मिले।
- 4. महिलाओं की भागीदारी:** महिलाएं पारिवारिक पोषण में मुख्य भूमिका निभाती हैं। पोषण अभियान महिलाओं को खेती में निर्णय लेने, पौष्टिक फसलों के चयन और घरेलू खाद्य सुरक्षा को सुदृढ़ करने में सक्षम बना रहा है।
- 5. फसल विविधीकरण (Crop Diversification):** एक ही प्रकार की फसल पर निर्भरता से पोषण असंतुलन होता है। पोषण अभियान के तहत किसानों को एक से अधिक फसलों (जैसे अनाज, फल, सब्जियाँ, दालें) की मिश्रित खेती की ओर प्रेरित किया जा रहा है।

सरकारी योजनाएँ और पहलें जो कृषि को पोषण से जोड़ती हैं:

योजना / पहल उद्देश्य

पोषण वाटिका योजना ग्रामीण परिवारों को ताज़ा सब्जियाँ व फल उपलब्ध कराना
बाजरा मिशन (Millets Mission) पोषण युक्त मोटे अनाजों को प्रोत्साहित करना
एकीकृत बाल विकास सेवा (ICDS) बच्चों को पोषण युक्त

आहार देना, जिसमें स्थानीय कृषि उत्पादों का उपयोग कृषि विज्ञान केंद्र (KVK) किसानों को पोषण उन्मुख कृषि के लिए प्रशिक्षण देना

नतीजे और प्रभाव

- पोषक फसलों की खेती बढ़ने से कुपोषण की दर में गिरावट देखी गई है।
- महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त किया गया है, खासकर SHG समूहों के माध्यम से।
- बच्चों और गर्भवती महिलाओं को स्थानीय रूप से उपलब्ध पौष्टिक आहार मिल रहा है।
- स्थानीय खाद्य प्रणाली को मजबूती मिली है, जिससे जलवायु और पोषण दोनों के प्रति संवेदनशीलता बढ़ी है।

चुनौतियाँ

- किसानों में जागरूकता की कमी
- बाजार में पोषक फसलों के लिए उचित दाम और मांग की कमी
- कृषि-से-पोषण नीति समन्वय का अभाव
- कमजोर आपूर्ति श्रृंखला (supply chain)

निष्कर्ष

कृषि और पोषण एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। यदि कृषि को पोषण की दृष्टि से संवेदनशील बना दिया जाए, तो कुपोषण की समस्या को जड़ से समाप्त किया जा सकता है। इसके लिए जरूरी है कि किसान, महिला समूह, नीति निर्माता और आम नागरिक सभी मिलकर "पोषण उन्मुख कृषि" को अपनाएं।

“जब खेत होंगे पोषक, तभी थाली होगी संतुलित”